बगियाक गाछ

चतुर बालक आ ठगिन डाइनक हास्य-रोमांचक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : बगियाक गाछ

एकटा एहन गाछक खिस्सा, जे ने देखल गेल छल, नहिये सुनल — बगियाक गाछ। आ एहि गाछक कातमे बसैत छल एकटा एहन बालक, जकर चतुराइ ओकरा हर विपत्तिसँ बचा लेने छल।

ई गाथा हास्य आ रोमांच दुनूसँ भरल अछि — एकटा माएक ममता, एकटा बालकक बुद्धि, आ एकटा डाइन बुढ़ियाक छल, जकर अन्त ओकरे षड्यन्त्रसँ भेल।

अध्याय १ : मसोमातक बेटा

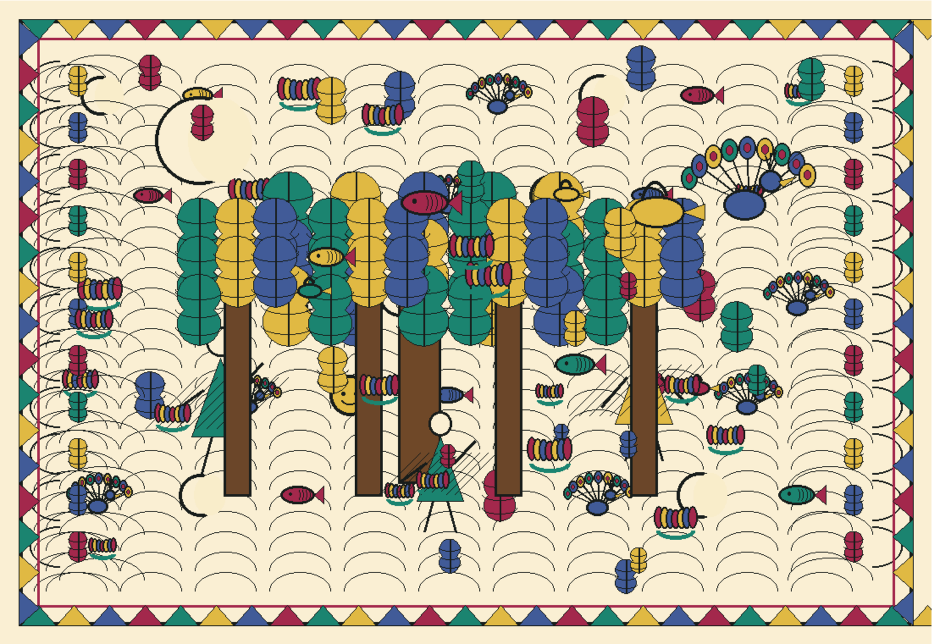

चित्र 1

एकटा मसोमात रहथि, आ हुनका एकेटा बेटा छलनि — बड्ड चुस्त, चलाक, आ बुद्धिमान। गरीब घर छल, मुदा माए-बेटाक प्रेम अपार छल।

एक दिन माए अपन बेटाकेँ बगिया आनि देलखिन्ह। बालककेँ बगिया बड्ड नीक लागल — एहन स्वाद, एहन आकार, जे ओकर मोन मोहि लेलक।

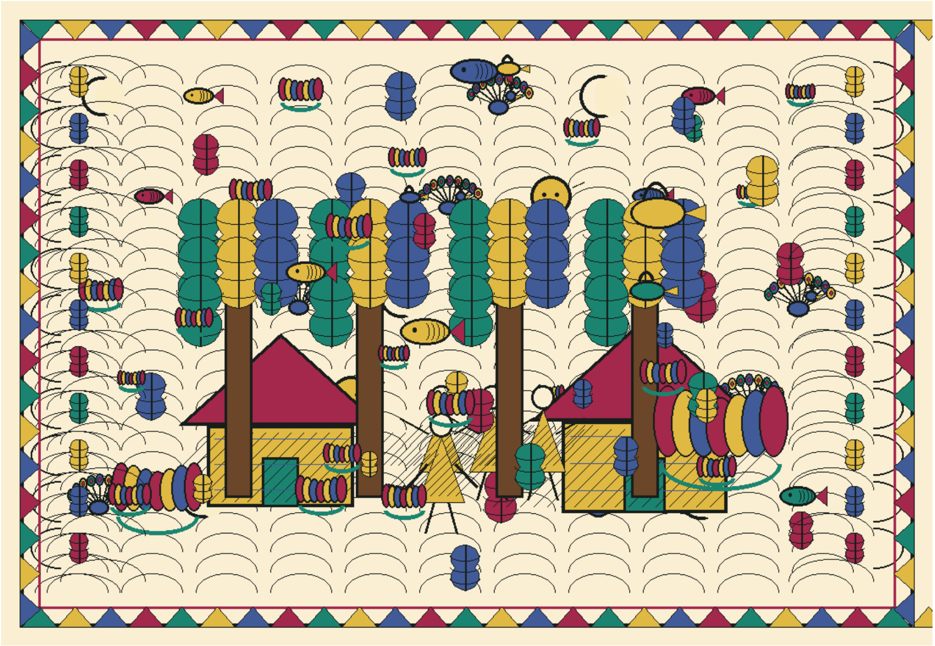

चित्र 2

बालक एकटा बगिया अपन बाड़ीमे रोपि देलक — बिनु ई बुझने जे ई की चमत्कार करत। किछु दिनमे ओतय एकटा गाछ जनमल — बगियाक गाछ, जे ने ककरो देखल छल, ने सुनल!

माए-बेटा दुनू ओहि अद्भुत गाछक खूब सेवा करए लगलाह — पानि दैत, माटि साफ करैत, प्रेमसँ पोसैत। कनेक दिनमे गाछमे खूब बगिया फड़ए लागल। बालक सभ दिन गाछपर चढ़ि बगिया तोड़ि खाइत — ओकर सभसँ प्रिय काज बनि गेल छल ई।

अध्याय ३ : डाइनक नजरि

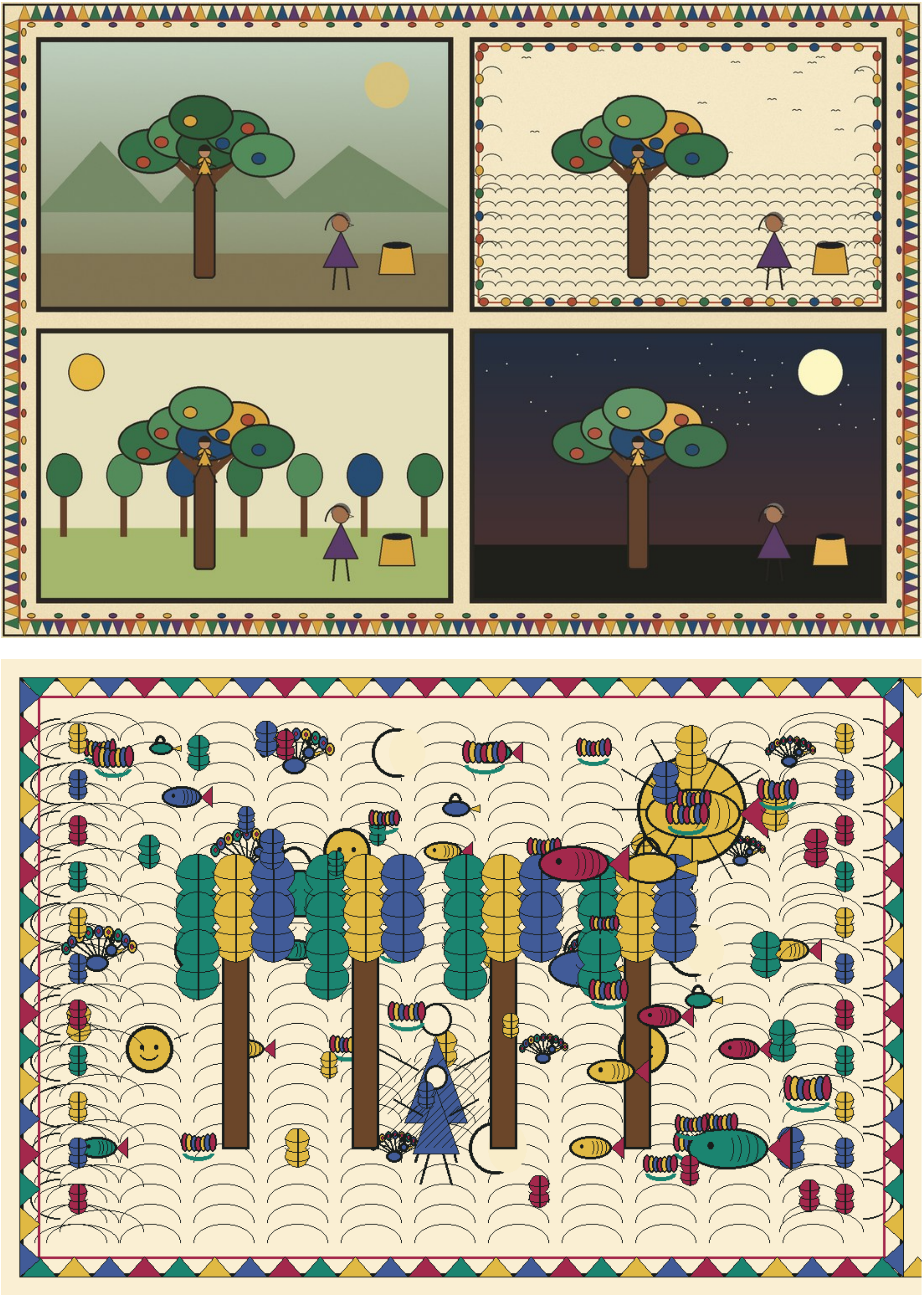

चित्र 3

एक दिन एकटा डाइन बुढ़िया ओही रस्तासँ जा रहल छलि। ई डाइन कोनो साधारण बुढ़िया नहि छलि — ओकरा मनुक्खक मसुआइ खाएमे बड्ड नीक लगैत छल, आ ओ सदिखन एहन शिकारक तलाशमे रहैत छलि।

बगियाक गाछपर चढ़ल बालककेँ देखि डाइनक मोन लुसफुस करए लागल — 'केहन हृष्ट-पुष्ट बालक! एकरा घर लऽ जा मसुआइ बनाएब!' ओकर आँखिमे लोभ चमकि उठल।

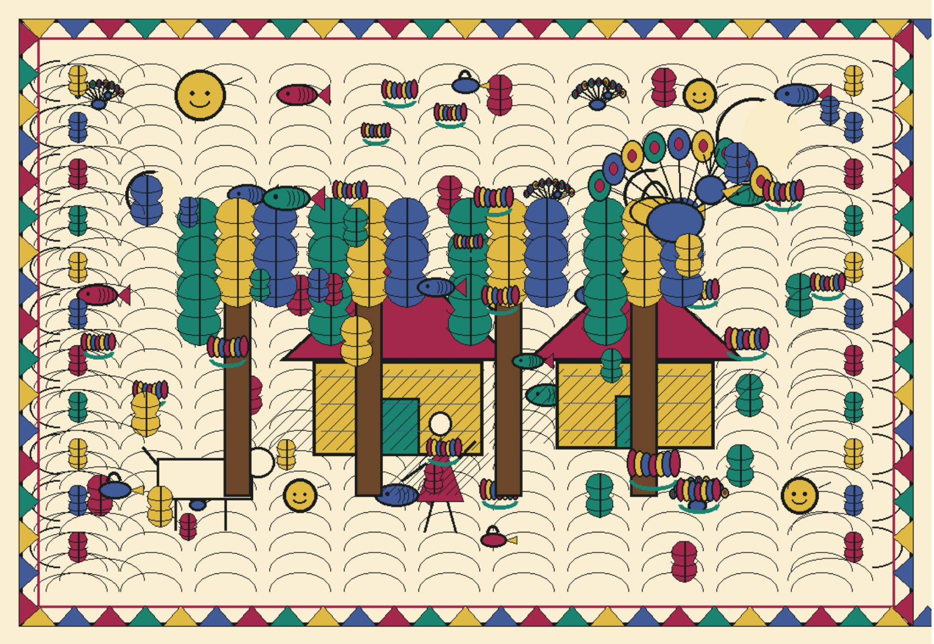

चित्र 4

डाइन तुरत एकटा मोनसूबा बनओलक — कोना कऽ एहि बालककेँ फुसिया कऽ अपन बोरामे बन्न करी। ओ चालाकीसँ बालकक लग बढ़ल।

बच्चाकेँ असगर देखि डाइन मीठ स्वरमे बाजलि — 'बौआ, एकटा बगिया हमरा नहि देब? बड्ड भूख लागल अछि।' ओकर स्वरमे एहन याचना छल जे कोनो निर्दोष बच्चा तुरत विश्वास कऽ लेत।

अध्याय ३ : तीन बहन्ना

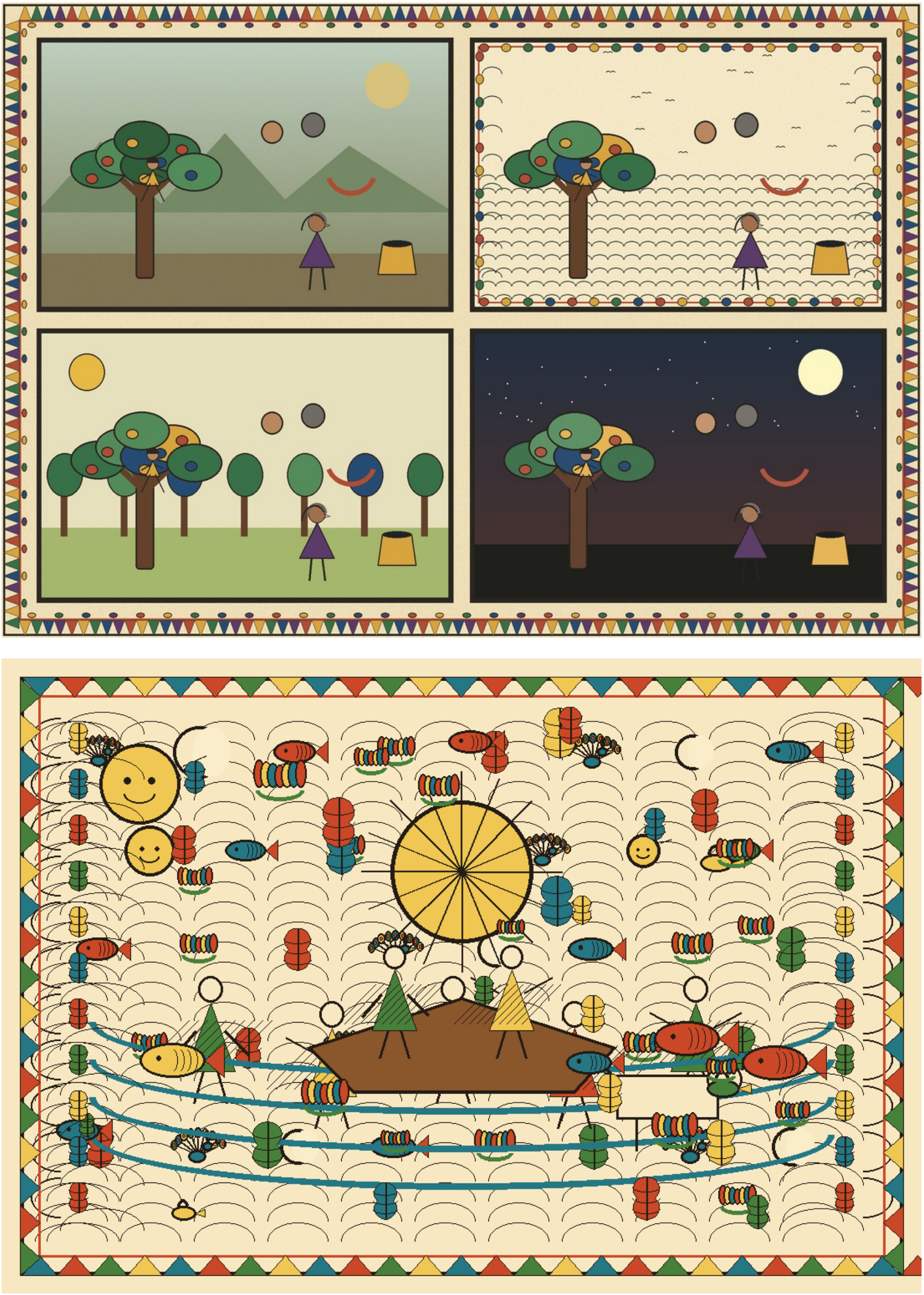

चित्र 5

सोझ बालक — शंकासँ रहित — बगिया डाइनक हाथपर देबए लागल। मुदा डाइन तुरत बहन्ना बनओलक — 'बौआ हम हाथसँ कोना लेब, बगिया हथाइन भऽ जाएत!'

बालक फेर बगिया ओकर माथपर राखए लागल। डाइनक फेर बहन्ना — 'हँ हँ माथपर नहि राखू, मथाइन भऽ जाएत!' — ओकर सभ बहन्नाक पाछाँ एकटा योजना छल, बालककेँ लग आनबाक।

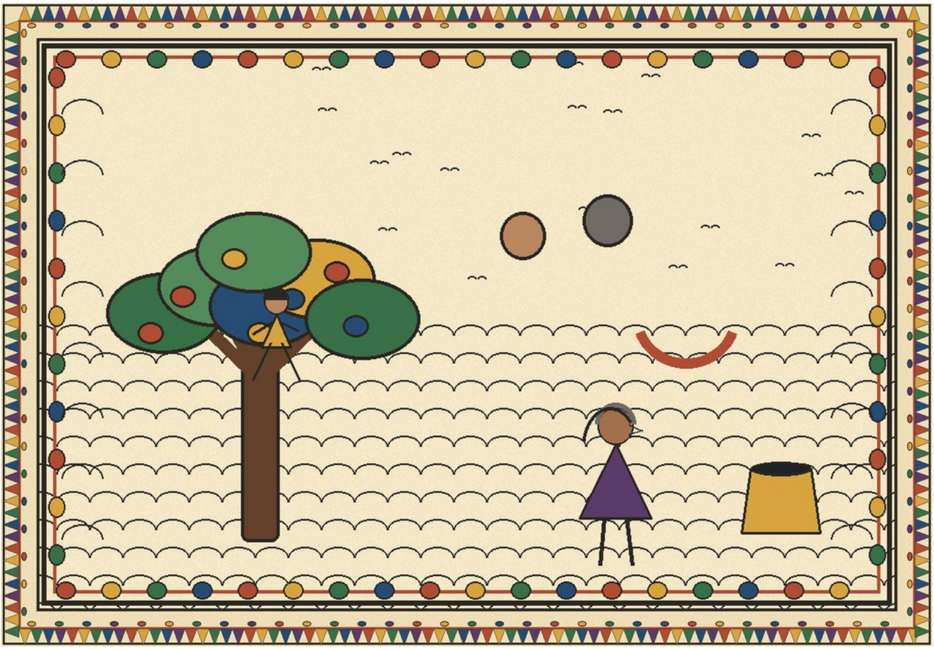

चित्र 6

बालक — जे दस बुधियारक एक बुधियार छल — फेर खोइछमे बगिया देबए लागल। डाइन तेसर बेर बहन्ना बनओलक — 'ई की करैत छी बौआ, बगिया खोँछाइन भऽ जाएत, अहाँ झुकि कऽ बोरामे दऽ दिअ!'

मुदा बालक तँ छल गोनू झाक मूल-गोत्रेक — ओ तुरत बुझि गेल। 'नञि गए बुढ़िया। तोँ हमरा बोरामे बन्द कऽ भागि जेमह। माए हमरा ठग सभसँ सचेत रहबाक हेतु कहने अछि!' — बालकक सतर्कता प्रशंसनीय छल, मुदा डाइनक चालाकी अइ सँ बेसी गहींर छल।

अध्याय ४ : बोरामे बन्न

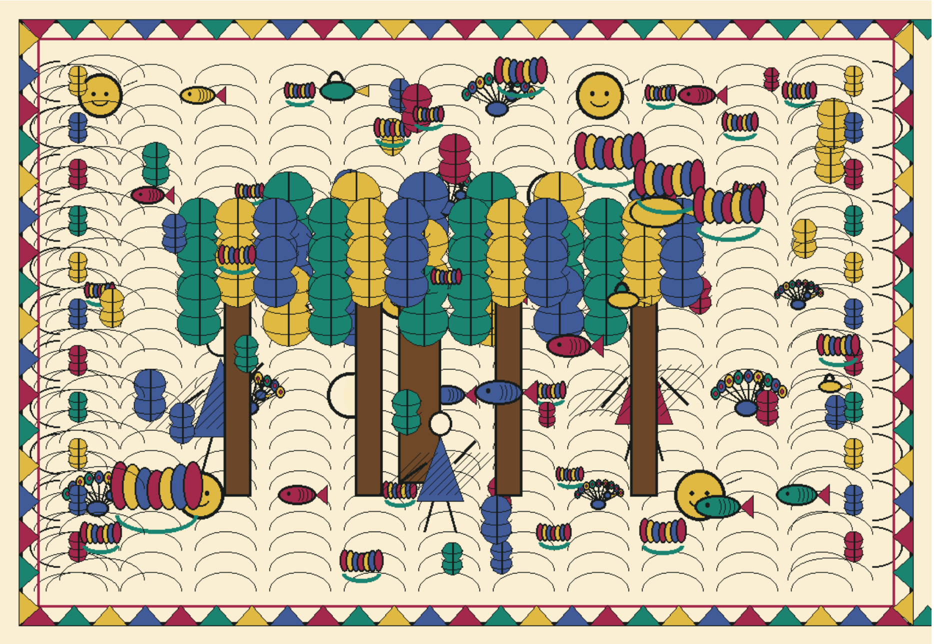

चित्र 7

डाइन — जे स्वयं ठगिन बुढ़िया छलि — तुरत फेर बोली-बानीसँ बालककेँ मना लेलक। मीठ बात, विश्वासक वादा, आ अन्ततः बालक झुकि गेल।

जखने बालक झुकल, डाइन ओकरा फुर्तीसँ बोरामे कसि कऽ बन्न कऽ देलक। बालकक चतुराइ एक क्षणक असावधानीमे हारि गेल। डाइन प्रसन्नतासँ बिदा भेलि, अपन शिकार लऽ कऽ।

चित्र 8

रस्तामे थाकि कऽ डाइन एकटा गाछक छाहरिमे बैसि गेलि — बोरा ओकर लग राखि। यात्राक थकानसँ कनेक कालमे ओकरा आँखि लागि गेल — निन्न ओकरा जकड़ि लेलक।

बालक — जे बोरामे बन्न छल, मुदा हिम्मत नहि हारने छल — मौका देखि कोनहुना कऽ बोरासँ बाहर निकलि गेल। ओकर बुद्धि फेर जागृत भऽ गेल छल, आ अवसरक तलाशमे ओ पूर्ण सतर्क छल।

अध्याय ५ : माटि-पाथरक चालि

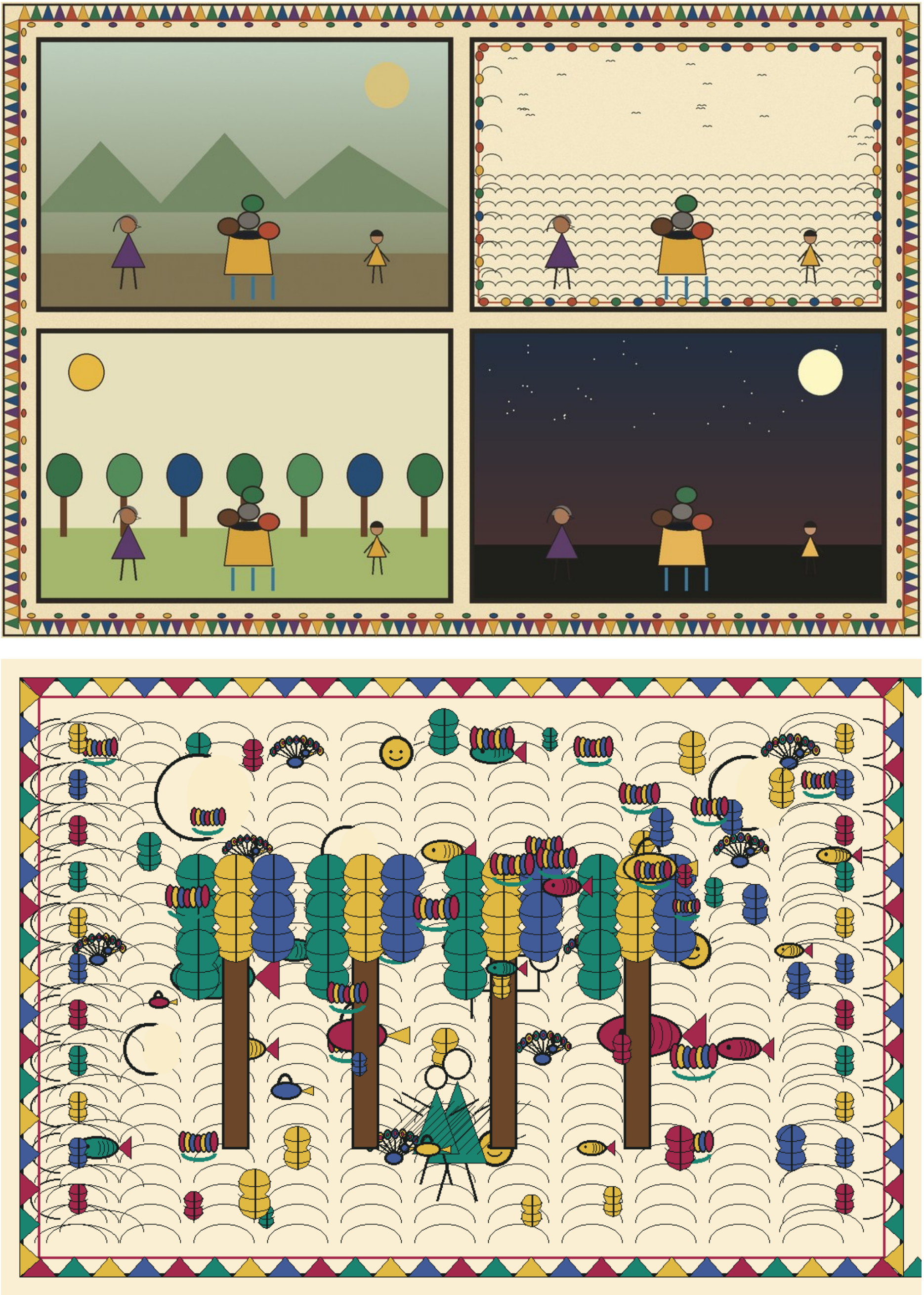

चित्र 9

बाहर निकलि बालक चारू कात तकलक — कोन उपाय करी, जाहिसँ ई डाइन आगाँ धोखा खाए? ओकर नजरि भीजल माटि, पाथर, आ काँट-कूसपर पड़ल।

बालक चतुराइसँ भीजल माटि, पाथर, आ काँट-कूस बोरामे भरि देलक — ठीक ओतबे भार, जतबे ओकर देहक भार रहितए। फेर बोराकेँ पहिनेक जकाँ बान्हि, ओ ओतयसँ पड़ा गेल।

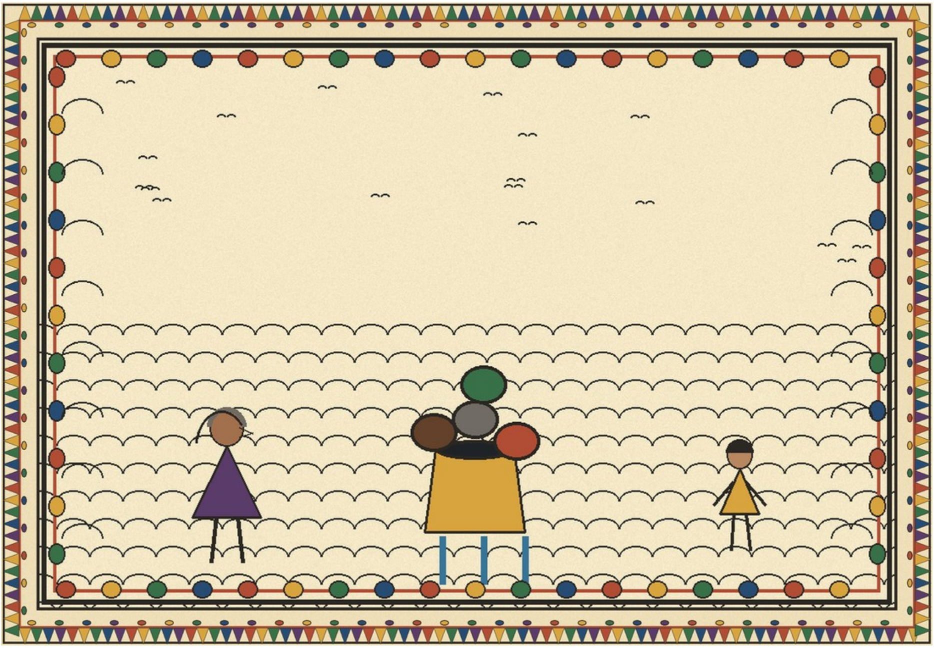

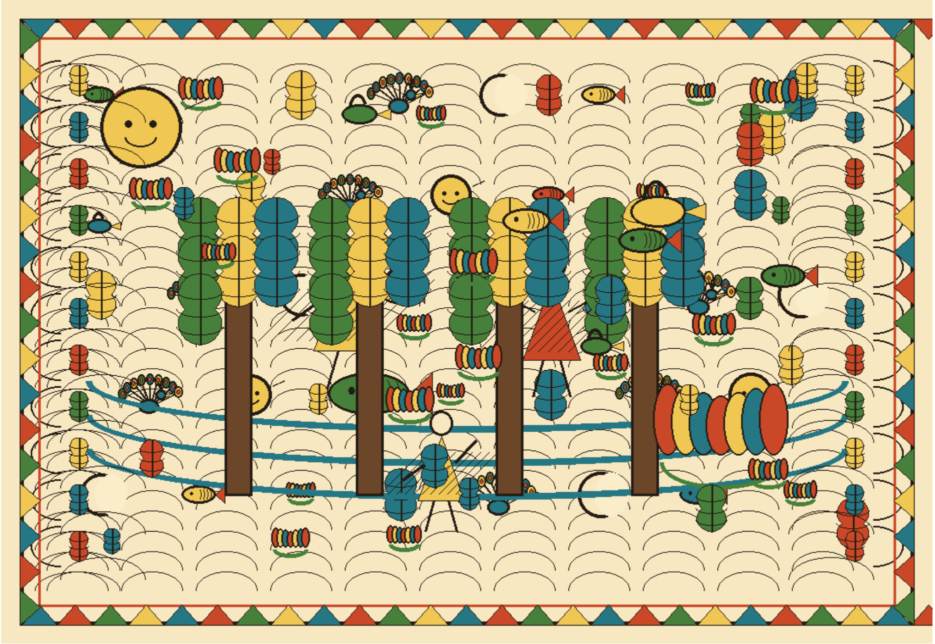

चित्र 10

डाइन जखन सूति कऽ उठलि आ बोरा उठा आगाँ बढ़लि, त' ओकरा बोरा भरिगर बुझायल। ओ मोने-मोन प्रसन्न भऽ गेलि — 'हृष्ट-पुष्ट मसुआइ खएबाक मौका बहुत दिनपर भेटल अछि!'

रस्तामे भीजल माटिसँ पानि खसए लागल त' डाइनकेँ लगलैक जे बालक लगही कऽ रहल अछि। ओ हँसैत कहलक — 'माथपर लघुशंका कऽ रहल छह बौआ? कोनो बात नहि, घरपर तोहर मसुआइ बना कऽ खायब हम!' — डाइनक अज्ञानता आ बालकक चतुराइक ई विरोधाभास हास्यक चरम छल।

अध्याय ६ : घर धरिक धोखा

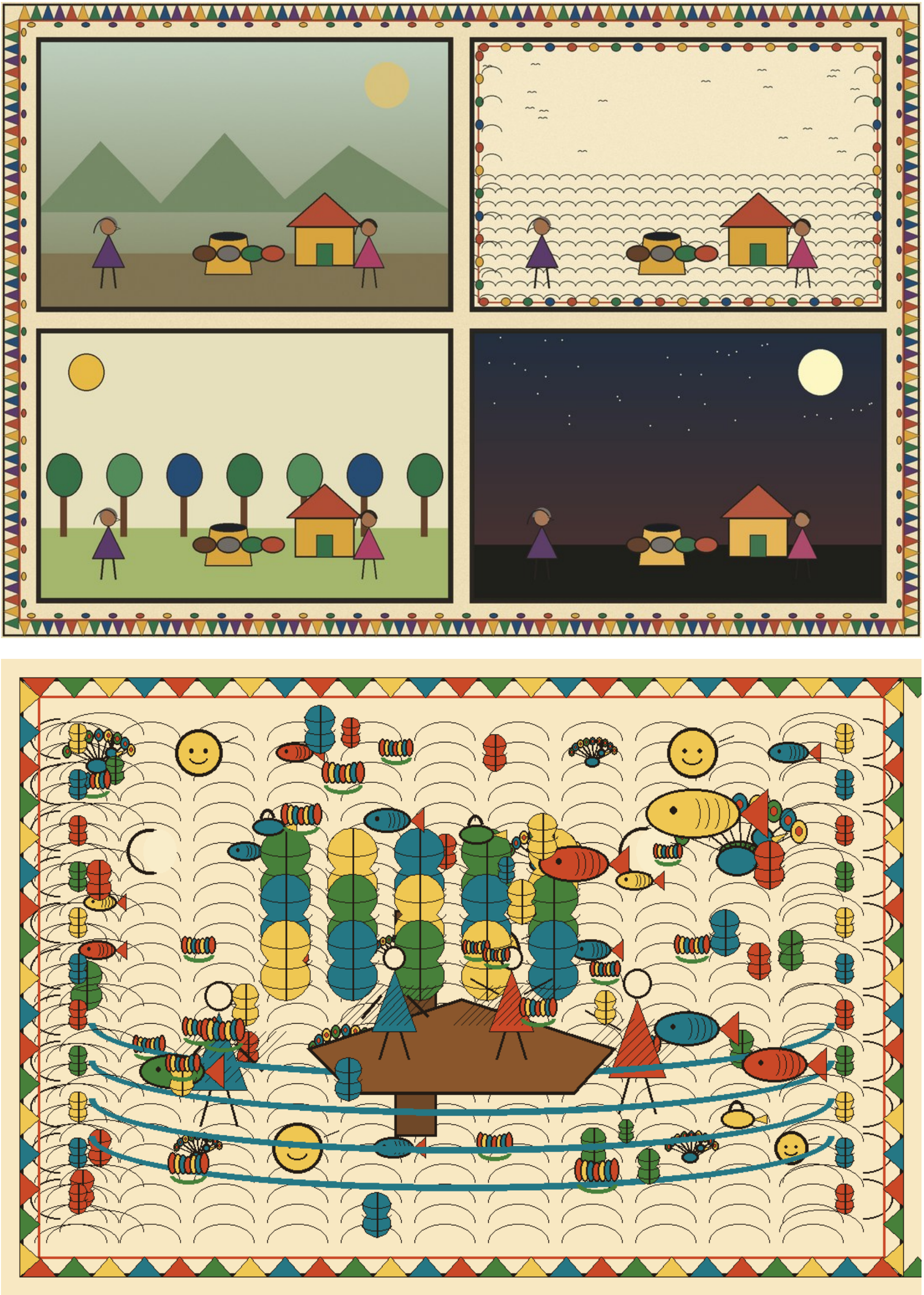

चित्र 11

कनेक कालक बाद काँट डाइनकेँ गरए लागल। ओ फेर बालककेँ -जे असल मे माटि-पाथर छल- सम्बोधित करैत कहलक — 'बौआ, बिट्ठू काटि रहल छी? कोनो बात नहि, कतेक काल धरि काटब!'

डाइनक एकटा बेटी छलैक। गाम पहुँचि डाइन ओकरा उत्साहसँ कहलक — 'आइ एकटा मोट-सोट शिकार अछि बोरामे! तैयार रहह!'

चित्र 12

माए-बेटी जखन उत्सुकतासँ बोरा खोललक, त' निकलल माटि, काँट, आ पाथर — बालक नदारद! सभटा योजना भरभरा गेल — डाइनक मुँह क्रोध आ लज्जासँ लाल भऽ गेल।

मुदा डाइन हारि माननिहार नहि छलि। 'कोनो बात नहि' कहि, ओ भेष बदलि फेर बगियाक गाछ तर पहुँचि गेलि — दोसर प्रयासक लेल तैयार, पहिल विफलताकेँ बिसरैत।

अध्याय ७ : दोसर प्रयासक असफलता

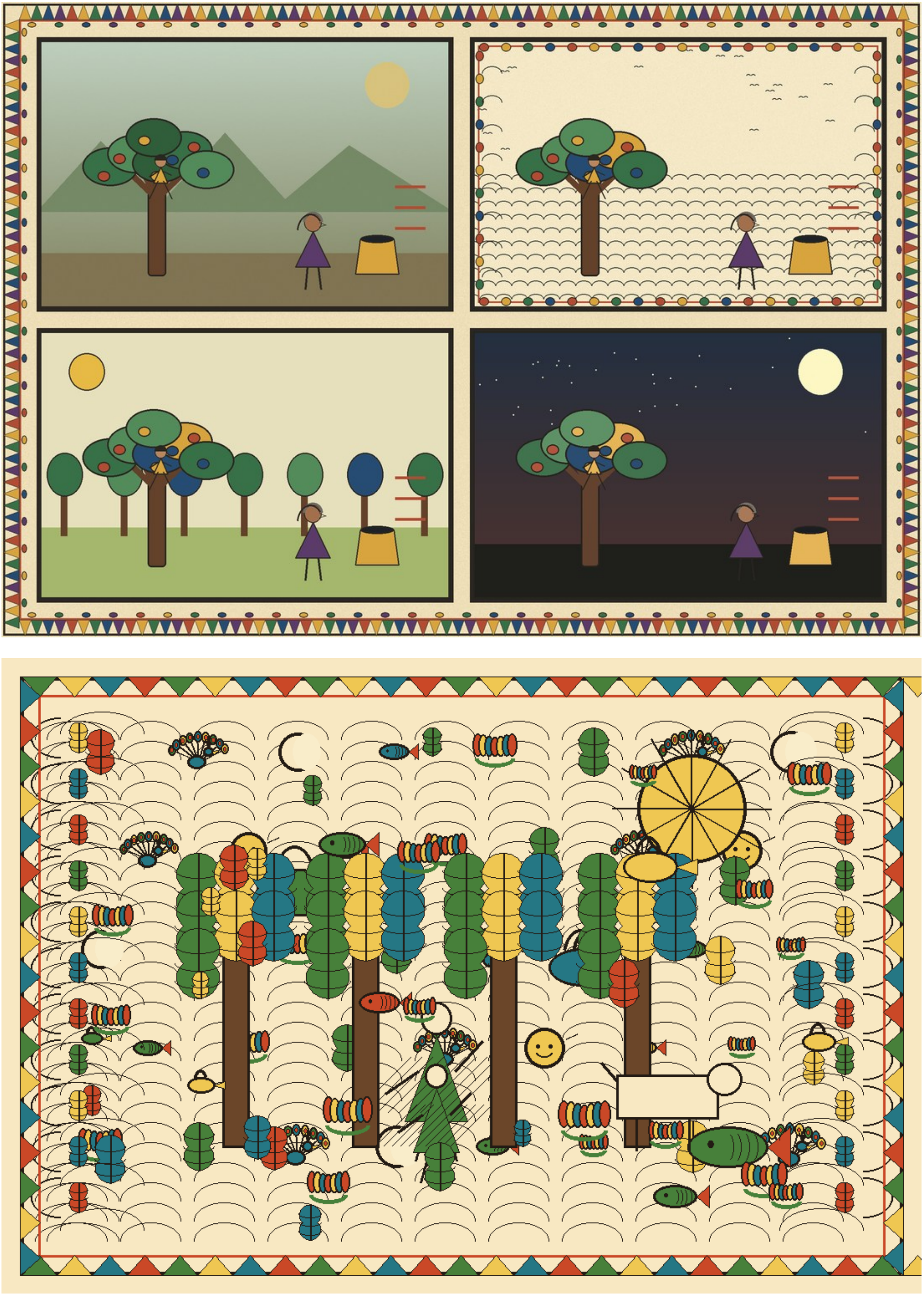

चित्र 13

एहि बेर बालक डाइनकेँ नहि चीन्हि सकल — भेष एतेक बदलल छल। मुदा जखन ओ झुकि कऽ बगिया बोरामे देबाक गप कहलक, त' बालककेँ फेर आशंका भेल — पुरनका अनुभवक स्मृति जागल।

'गए बुढ़िया, तोँही छँह ठगिन बुढ़िया!' बालक साहससँ आरोप लगओलक। मुदा डाइन तुरत सप्पत खएलक — 'नहि बौआ, हम ठगिन नहि छी!' — झूठक ई सप्पत अतेक विश्वासजनक छल जे बालक फेर मानि गेल।

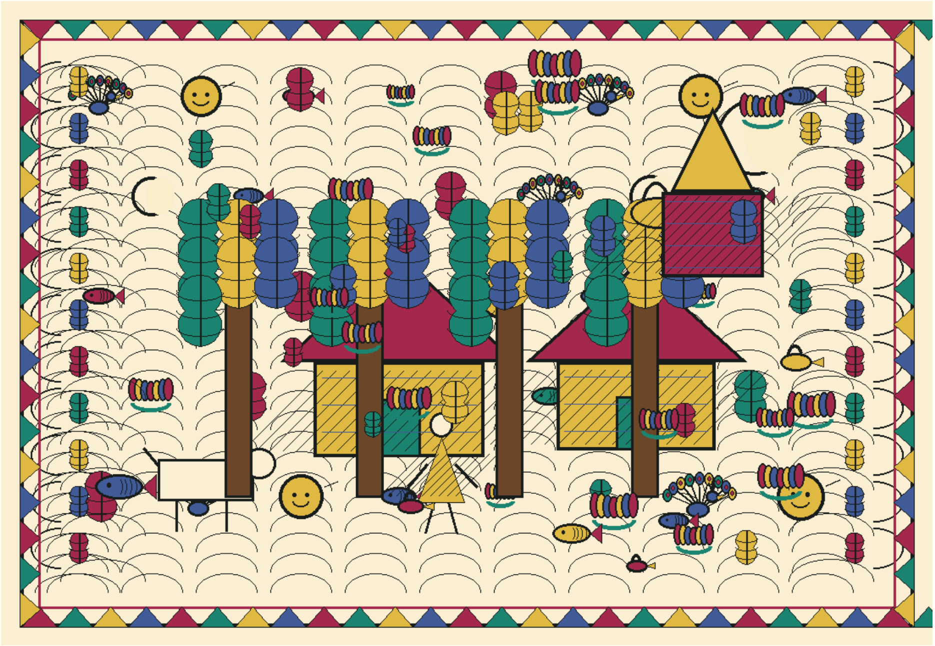

चित्र 14

बालक झुकि बगिया बोरामे देबए लागल — फेर वैह पुरान चालि दोहराओल गेल। मुदा एहि बेर डाइन कोनो जोखिम नहि उठओलक — रस्तामे कतहु नहि रुकल, सोझे घर पहुँचल।

बेटी लग बोरा राखि, डाइन नहाइ-सोनाइ लेल तुरत चलि गेलि। कोनो अवसर नहि छोड़ल गेल। एहि बेर सतर्कता पूर्ण छल।

अध्याय ८ : झोँटाबला रहस्य

चित्र 15

बेटी उत्सुकतासँ बोरा खोललक — मुदा भीतरसँ माटि-पाथर नहि, एकटा झोँटाबला बच्चा निकलल! बेटी अकचकाइत पुछलक — 'हमर केश नमगर नहि अछि किएक?'

बालक — जे आब पूर्ण रूपसँ चतुराइक खेलमे उतरि चुकल छल — तुरत उत्तर देलक — 'अहाँक माए अहाँक माथ ऊखड़िमे दऽ समाठसँ नहि कूटने होयतीह। तैँ!' — ई उत्तर दस होसियरक एक होसियार बालककेँ शोभा देत।

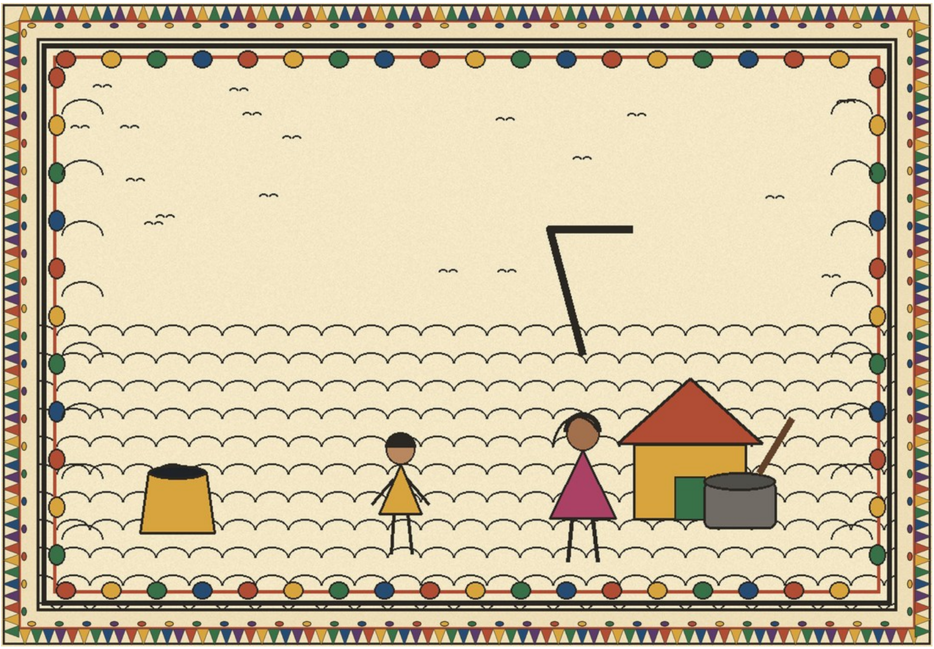

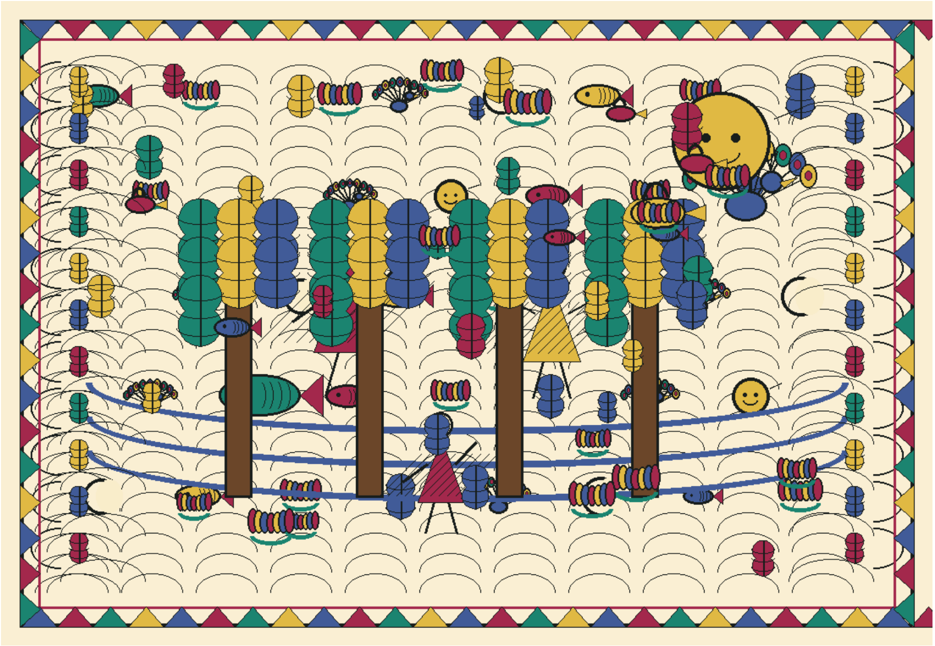

चित्र 16

डाइनक बेटी — सोझगर आ अनजान — एहि झूठ उत्तरपर विश्वास कऽ लेलक। ओ अपन केश बढ़ेबाक लोभमे अपन माथ ऊखड़िमे राखि देलक, आ बालककेँ समाठसँ कूटबाक अनुमति देलक।

बालक — आत्मरक्षा आ चतुराइक चरम प्रदर्शन करैत — ओहि क्षणक अवसर लेलक। ई गाथाक सभसँ अन्हार क्षण छल, जकर विस्तार गाथा नहि करत — मुदा एतबा स्पष्ट अछि जे बालक अपन प्राण बचा, डाइनक बेटीकेँ छलमे फँसा, अपन जान बचा लेलक।

अध्याय ९ : बिलाड़िक चेतौनी

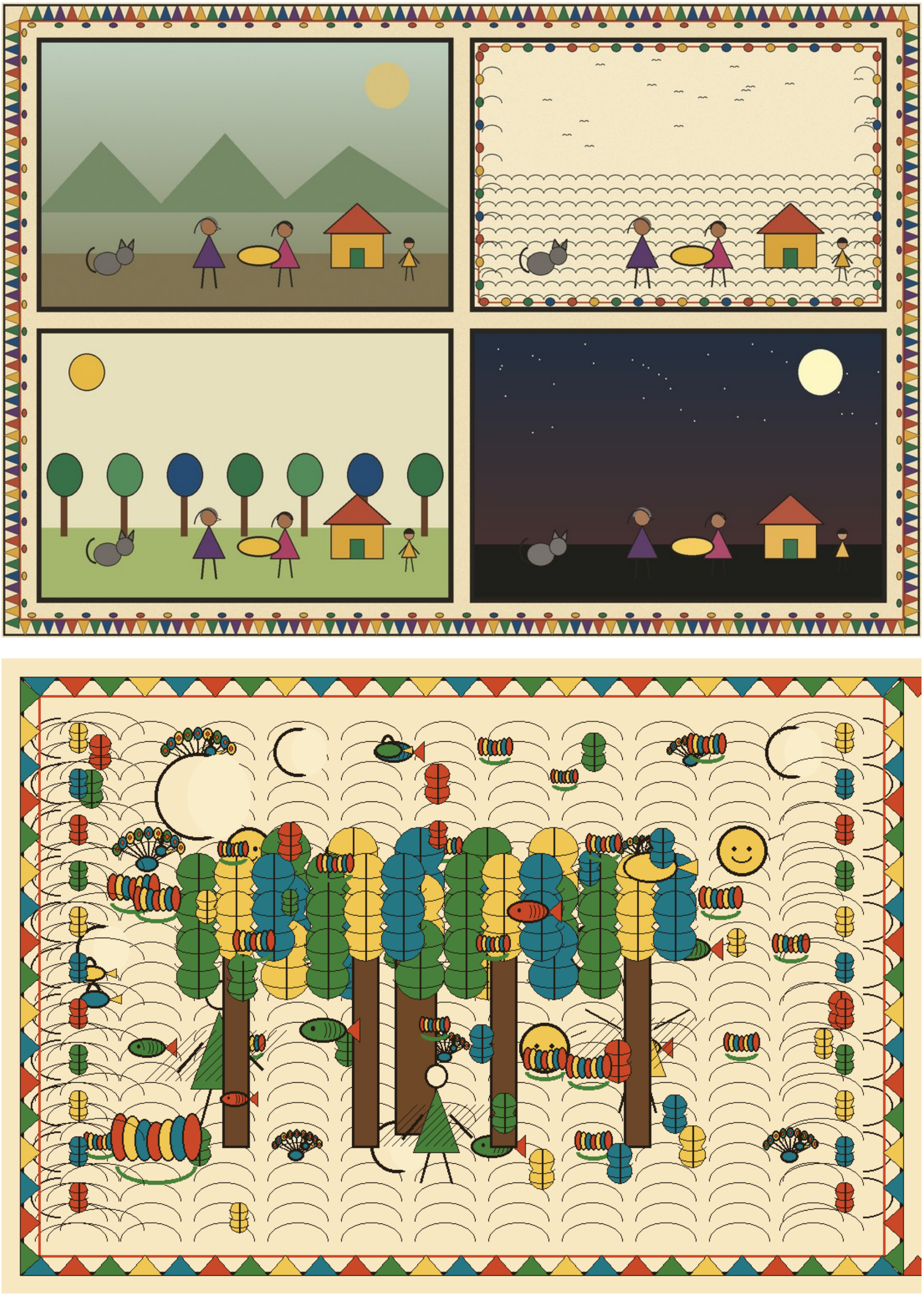

चित्र 17

जखन डाइन पोखरिसँ नहा कऽ आयल, त' ओकर बेटी -जे आब बालकक चालिसँ चलि रहलि छल- डाइनक आगाँ खेनाइ परसि देलक — बिनु ई बुझने जे ई खेनाइ की छल।

जखने डाइन खेनाइपर बैसलि, त' लगमे बैसल एकटा बिलाड़ि बाजि उठल — 'म्याँऊ! अपन धीया अपने खाँऊ! म्याँऊ!' — पशुक ई चेतावनी सत्यकेँ उजागर करैत छल, जे मनुक्खक आँखि नहि देखि पओलक।

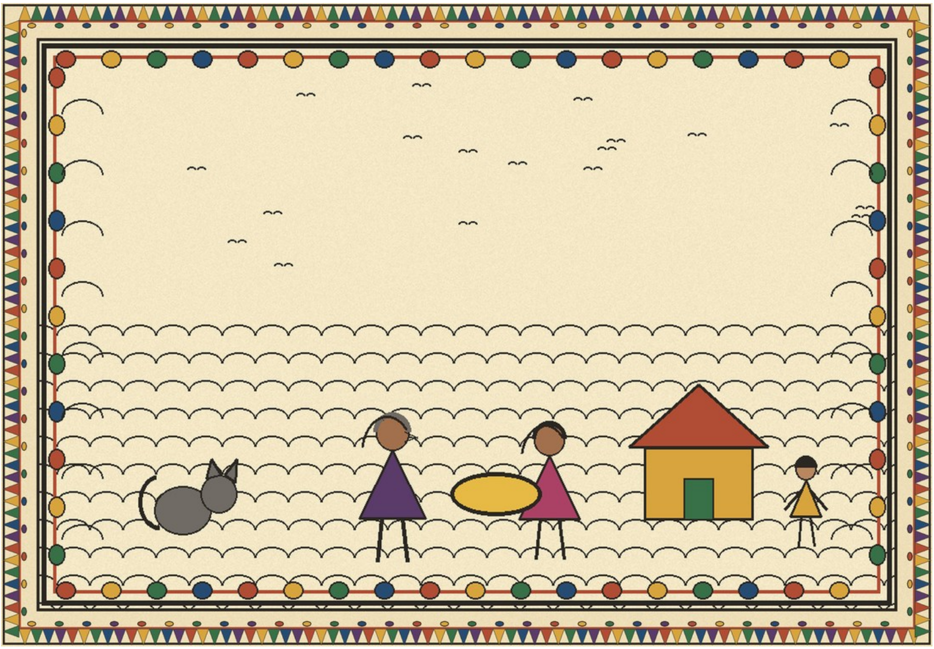

चित्र 18

डाइन अचरजसँ पुछलक — 'बेटी, एकरा मासु नहि देलहुँ की? तैँ बाजि रहल अछि।' बेटी बिलाड़िक आगाँ मासु राखि देलक, मुदा बिलाड़ि छूलक तक नहि — पशुक सहज ज्ञान मनुक्खक भ्रमसँ ऊपर छल।

आब डाइनक माथ घूमल — शंका आ क्रोध दुनू। ओ बेटीकेँ पुछपाछ केलक, आ सत्य आस्ते-आस्ते स्पष्ट होमए लागल — मुदा बहुत देरी भऽ चुकल छल।

अध्याय १० : डाइनक अपने कर्मफल

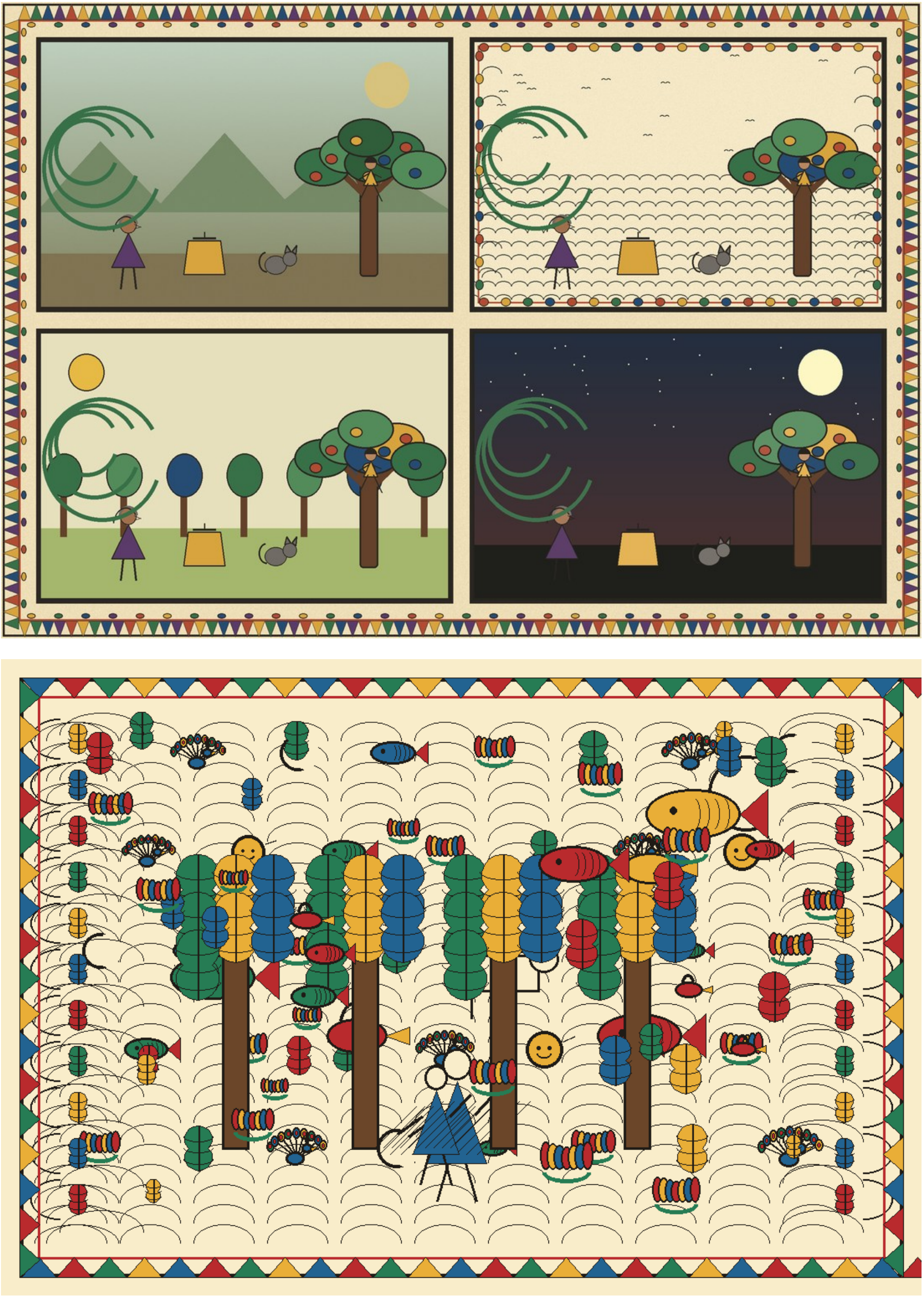

चित्र 19

डाइन जखन असलक पूर्ण अनुमान लगओलक — जे बालक फेर एक बेर धोखा दऽ चुकल अछि, आ एहि बेर ओकर बेटीक संग किछु भयंकर घटित भेल अछि — त' ओकर क्रोध सीमा तोड़ि गेल।

डाइन बेटीकेँ पुनः सोर केलक — मुदा एहि बेर उत्तर बालकक स्वरमे आयल, समाठ लऽ कऽ। ई गाथाक ओ क्षण छल जतय छल अपन जालमे स्वयं फँसि गेल — जे षड्यन्त्र ओ बालकक विरुद्ध रचने छलि, से अन्ततः ओकरे परिवारपर पड़ल।

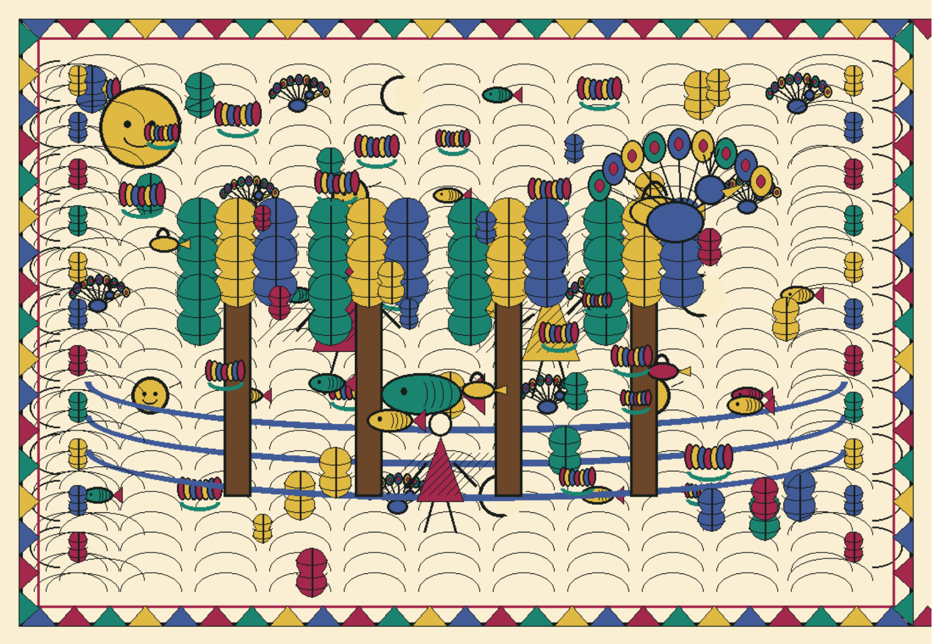

चित्र 20

गाथा एहि दुखद घटनाक विस्तृत वर्णन नहि करत — खाली ई एतबा कहैत अछि जे डाइनक स्वयंक कुकर्म ओकरे आगाँ आबि खसल। जे बालककेँ खएबाक लोभ केने छलि, से अपन आ अपन बेटीक हानिक रूपमे मूल्य चुकौलक — नियतिक ई न्याय कठोर मुदा स्वाभाविक छल।

आ बालक? ओ फेर अपन बगियाक गाछ लग घुरि आयल। गाछपर चढ़ि, पहिने जकाँ निश्चिन्त भऽ, ओ बगिया तोड़ि खाए लागल — बड्ड नीक लगैत छलैक ओकरा बगिया। सभटा विपत्ति, सभटा छल-कपट पार कऽ, बालक अपन साधारण, मीठ जीवनमे फेर घुरि आयल — चतुराइ आ साहसक ई गाथा एतय समाप्त होइत अछि, जतयसँ शुरू भेल छल: गाछ, बगिया, आ एकटा निर्भय बालक।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in